International Recognized Double-Blind Peer Reviewed Multidisciplinary Research Journal
Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063 **Impact Factor : 3.4052 (UIF)**
Volume - 4 | Issue - 11 | May - 2015 **Available online at www.isrj.org**

राजेंन्द्र यादव के कथा साहित्य में युवा मनोविज्ञान

शीला य भंडारि

सह अद्यापिका, हिन्दी विभाग, कर्नाटक कला महाविद्यालय, धारवाड, (कर्नाटक), भारत.

Short Profile :

Sheela Y. Bhandari is working as an Teaching Assistant at Hindi Department in Art College , Dharwad , Karnataka (Karnataka) , India.

सारलेख :

जीवन की सभी परम्परागत मान्यताओं और विश्वासों के प्रति अनास्था भी इन कहानियों की एक प्रमुख विशेषता है । दो शब्दें में कहें तो ये पुराने के प्रति मोहभंग और नई राहों के अन्वेषण की कहानियँ हैं । इसीलिये इन्हें नई कहानी कहते हैं । और इसीलिये इन्हें आधुनिकतावादी भी कहा गया है ।

प्रमुखशब्द :

प्ररंपरागत मान्यताऐं “अलगाव, अकेलापन, अजनबीपन जीवन के चकाचौंद ।

प्रस्थावना :

नई कहानियाँ महानगरीय जीवन की पुष्टभूमि में लिखी गई है । आधुनिकतावादी विचारधारा से प्रभावित लेखकों जैसे कमलेश्व्र, मोहन राकेश, राजेन्द्र यादव, कृष्णा सोबती, निर्मल वर्मा, मन्नू भंडारी और उषा प्रियंवधा आदि की कहानियों में महानगरीय जीवन की चकाचौंघ के बीच रह रहे ब्यक्ति के मन में व्यास–भय, संत्रस, अलगाव, अकेलापन, कुंठा, और निराशा नथा आजनबीपन की अभिव्यक्ति मिलती है ।

इनके आलावा इन कहानियों में संदेह, आशंका, जीवन की अथहीनता या व्यर्थता और क्षणभांगुरता आदि की भी उपस्थिति भी पाई जाती है ।

जीवन की सभी परम्परागत मान्यताओं और विश्वासों के प्रति अनास्था भी इन कहानियों की एक प्रमुख विशेषता है । दो शब्दें में कहें तो ये पुराने के प्रति मोहभंग और नई राहों के अन्वेषण की कहानियँ हैं । इसीलिये इन्हें नई कहानी कहते हैं । और इसीलिये इन्हें आधुनिकतावादी भी कहा गया है ।

आधुनिकतावाद 20बीं सदी के मद्य में कला और साहित्य के क्षेत्र में प्रचलित वह विचारधारा है जिसमें आधुनिक भावों, विचारों, पद्दतियों एंव सामग्रियों का प्रयोग किया गया है ।

ऊपर भय, संत्रास, अलगाव, अकेलापन, कुंठा, निरशा, अजनबीपन, संदेह, व्यर्थ्ता आदि का उल्लेख किया गया है जो नई कविता की तरह नई कहानी की भी प्रमुख अंतर्वस्तुगत विशेषताएँ हैं ।

हम देखते है कि ये सभी मनुष्य के मन के भाव हैं ।ये विचार नहीं हैं । हालांकि हम अक्सर अपने भावों को विचारो का जामा पहनाने का प्रयास करते है । लेकिन ये दोनों तत्वत: भिन्न हैं ।

भवों में श्रंखला और स्थिरता नहीं होति बल्कि उद्वेग हौता है ; इसीलिये नई कहानियों की भाषा और शैली में भी स्थिरता नहीं है । इसीलिये यह देख जाता है कि फैंटेसी, स्वप्न–भिम्भ, रूपक आदी नई कहानी के अनिवार्य अंग है । जागते हुये देखा गया सपना (विवास्वप्न) ही फैंटसी है । नींद में देखे गये चित्र स्वप्न–बिम्ब हैं । असंगति असंभाव्यत दिदोनों का सामान्य गूण है ।

विचार वह है जिसमें तार्किकता होति है । इसमें श्रुंखला हौती है । वाबों में तर्क नहीं सिर्फ अनुभूहि होतीहै । इसमें उद्वेग होता है । मनोविज्ञान का विषय हमारे भाव हैं, विचार नहीं । अत: राजेंन्द्र तादव की कहानियों में युवा मनोविज्ञान का अर्थ हुआ इन हकानियों के युव अपात्रों के मनोभावों का अद्यतन । अर्थात यह देखना कि इनमें ऊपर वर्णित भय, संत्रास, कुंठ, अकेलापन आदि की अभीव्यक्ति कहां तक और किस प्रकार की गयी है ।

मनोविज्ञान में मन का वैज्ञानिक विधि से अद्ययन किया जाता है और इस बात का भी अद्ययन किया जाता है कि यह मनुष्य के व्यवहार को किस प्रकर प्रभावित और संचालित करता है ।

आधुनिक मनोविज्ञान सीग्मंड फ्रायड के चिंतन से बहुत अधिक प्रभावित रहा है जिसमें इंद, अहम, और सुप्राहम, काम (लिबिडो), स्वप्न आदि का अद्ययन किया जाता है ।

हमारे लिए इसकि उपयोगिता यह है कि "आज के समाज में उपस्थित विचित्र परिस्थितियों तथा नर–नरियों के बनते–विगडते संबंधों को फ्रायड के सिद्दांतों के आलोक में सुगमता से समझ जा सकता है" ।

हिन्दी कथा साहित्य में मनोवैज्ञानिक विश्लेषण की परम्परा बहुत पुरानी है । जैनेन्द्र कुमार को इसका पुरस्कर्त माना जाता है । इस क्षेत्र में इलाचंद्र जोषी, सच्चिदानंद हीरानंद वात्स्यायन 'अज्ञेय', निर्मल वर्म, भागवतीचरण वर्मा, राजेन्द्र यादव, महीप सिंह और रमेश भख्शी आदि के नाम प्रमुख है ।

राजेन्द्र यादव की कहानियों में ये, अंतर्वस्तुगत और रूपगत विशेषताएँ खूब पाई जाती हैं । आगे इसी विवेचनकी रोशनी में इनकी 'प्रिय कहानियों' में युव मनोविज्ञान का अध्ययन किया जाएगा ।

ये कहानियाँ हैं – पुराने नाले पर नया फ्लौट, मजाक, अभीमन्यु की आत्माहत्या, खेल–खिलौने, सब्भंन्ध, किनारे से किनारे तक, भय और भविष्य के आसपास मंडराता अतीत ।

अभिमन्यु की आत्महत्या

इस दृष्टिसे 'अभिमन्यु की आत्महत्या' कहानी भी उल्लेखनीय है । इसमें तो फौंटसी ही प्रधान है और यह इस कथा के भीतर उपकथा का स्थान ले लेता है ।

खेल–खिलौने

यह राजेन्द्र यादवकी वह कहानी है जिसने उन्हैं नही कहानी - क्षेत्र में मान्यता दिकलाई । वे स्वयं लिखते हैं "इसी कहानी ने मुझे कहानी –क्षेत्र में मान्यता दिलाई थी और इसी ने जीवन में स्वीकृति का एक अनकहा मधुर आश्वासन दिया था..."

इस कहानी मेंनीरजा नाम की लडकी है जो पढाने में बहुत अच्छी है और उसकी ईच्छा आत्मनिर्भर बनने की है लेकिन परिवार वाले जबरदस्ती उसकी शादी करवा रहे हैं । इसी प्रसंग में

सुधीर नामक एक परिवार मित्र या संबंधी निलिनी नामक लडकी की कहानी सुनाता हैं । वह भी पडने लिखने में चित्रकला और संगीतकला तथा नृत्य में बहुत प्रवीण थी लेकिन उसकी शादी एक ऐसे घर में कर दी, जिसमें इन सद्दगुणो का कुछ भी महत्व नहीं था ।

उसकी अवस्था का चित्र उसके ही शब्दों में देखें – "मेरे चारो और भीषण अन्धकार की एक अभेध चादर आकर खडी हो गई है, मैं तब कितनी रोई–चीखी थी कि मुझे इस अंधकार के गर्त मे पंजों ने मेरी अभिलाषाओं और उच्चकांक्षओं की गरदनें मरोड दी है, और अब मैं इतनी अशक्त हौ गयी हूँ कि छट–पटा ई नहीं सकति ।: आखीरकार यह लडकी आत्मधात कर की लेती है । (वही पुष्ठ 68–69)

इस संग्रह की एक कहानी का तो शीर्षक ही है 'भय' । इसमें मजचूर बच्चों पर उसके मालीकों द्वारा किये जानेवाले शारीरिक मानासिक अत्याचार की कथा कही गयी है । इन कहानियोंमें यह दीखाया गया है कि आधूनिक जीवनकी त्रासदियों और इडम्बनाओं के आसान शिकार दो ही हैं –स्त्री और बच्चें ।

मजाक

यह कहानी भी युवा मनोविज्ञानके चित्रण की दृष्टि से बहुत महत्वपूर्ण है और पिछली कहानी में जैसे ऊब, अकेलेपन और कुंठा तथा जीवन की अर्थहीनता को दर्शाया बया था एसी तरह इस कहानी में भय, आशंका और संत्रास को दिखाया गया है । और अंत में पता चलता है कि यह भी निरर्थ्क ही था । असल में मनोविज्ञान यह बताता है कि हमारे भय और हमारी आशंकाऔं का अकसर कोई आढार ही नहिं हौता । अर्थात, अधिकांश मामलों में वे निराधार हौते है । इस कहानी के माद्यम से संभवत: इस सत्य को भि उचागर करने का प्रयास किया गया है ।

इसमें नमित अनाम की एक स्त्री का पति मचाक–मजाक में आथहत्या का नौत लिखकर धर से बाहर चला जाता है । वह स्वयं तो मोटर में लाँग द्राइव के मजे ले रहा है; बाकी उसका ऊरा अरिवार भय, आशंका और संत्रास में डूबा हुआ है }टेलीफोन की हर बारन बजने बाली घंटी पुरे परिवार की साँस को उपर का ऊपर और नीचे का नीचे लटका देती है ।

नई कहानियों में पाई जाने वाली कथ्य की नवीनता और जटिलता इसकी शैली को भी नवीन और जटिल बन देती है । नये भावों और नई परिस्थितियों को अभिव्यक्त और चित्रित करने के लिये नये–नये भिम्भों, प्रतीकों, उपमानों और ऊपकों का प्रयोग कीया गया है । इस दृष्टि से उस कहानी से कुछ उद्दरण दृष्ट्व्य हैं – "धनुष की खिंची प्रत्यंचा–सा वातावरण ढीला हुआ और घूटि हुई स्प्रिंग सी अटकी साँस औटकर आई।"

इस कहानी में भी दिवास्वप्न या फैंटेसी की शैली का प्रयोग वातावरण की भीषणता और परिस्थितियों की भयावहत अको उजागर करने के लिये कींय;आ गय अहै ।धर की औरतें दिवास्वप्न देखने लगती हैं कि कैसे नमिता का वैधव्य संस्कार किया जा रहा है । कैसे उसकी माँग पोछी जा राही है और कैसे उसकी चूडियाँ तोडी जा रही हैं आदि–आदि और पुरूष रोड एक्सीडेन्ट के कीसी फिल्मी दृश्य का सपना देखने लगते हैं कि गाडी पहाड से गिर कर किसी पेड में अटक गई है और उसमें सवार आदमी कपडे के अंत में यह सब कुढ एक मजाक साबित होता है । यह कहानी कहीं–न कहीं मद्यवर्तीय महानगरिय जीवन की उद्देश्यहीनता और निर्थकता का भी प्रकाषन करती है जहँ लोग वक्त काटने के लीये या मजे के लिये ऐसे–ऐसे धातक और भद्दे मजाक करते हैं ।

इस कहानी में ज्ञान देने की बात यह है की सारी मनोवैज्ञानिक समस्याओं से युवा वर्ग गी प्रस्त या प्रभावित है । भुजुर्ग लोग इससे बहुत हद तक दूर हैं । कहानी की शुरूआत ही उस दृस्य से होती है जिसमें एक अंकल शांत मृद्रा में माला का जाप कर रहे हैं ।इस पूरे ध की अधीरता में यही एक पुरूष है जो अपेक्षाकृत धौर्य से काम ले रहा है ।

राजेन्द्र यादव की अन्य कहानियों में भी युवा ही अधिकतर समस्याओं से गस्त दिखाये गये है ।

निष्क्रर्ष–समृतियों के साथ–साथ अपने परिवेश को समझाते, आसपास के संदर्भ खोजने की कोशिश इन कहानियों में आज बहुत साफ दिखाई देती है । अतीत की और लौटने की नही, वर्तमान पर ठहरने की, जलती हुई तात्कालिता को स्वीकार करने की झीझकती सी हिम्मा".

संदर्भ ग्रंन्थ सूची :

1) चंद्रभानु सोनवाणी कथाकार राजेंद्र यादव
2) डा. वेदप्रकाश अमिताभ रानेंद्र यादव कथा यात्रा